सामाजिक परिवर्तन के प्रौद्योगिक कारक (Technological Factor of Social Change)—

सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न करने में प्रौद्योगिक कारक सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। प्रौद्योगिकी वह ज्ञान अथवा साधन है जिसके माध्यम से हम जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं को प्राप्त करते हैं। उदाहरण के लिए यदि पत्र लिखना हमारा उद्देश्य है तब फाउण्टेनपेन लिखने का साधन होगा, और फाउण्टेनपेन बनाने की मशीन द्वारा उस साधन का निर्माण किया जा सकेगा। इस प्रकार फाउण्टेनपेन बनाने की मशीन प्रौद्योगिकी होगी। इसी प्रकार यदि कोई मशीन बनाना हमारा उद्देश्य है तब उस मशीन को बनाने में जिन उपकरणों और विज्ञान की आवश्यकता होगी, उसे हम प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत सम्मिलित करेंगे। इससे स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे मानव ज्ञान में वृद्धि होती जाती है, प्रौद्योगिकी के रूप में परिवर्तन होता जाता है। इस आधार पर कार्ल मार्क्स (Karl Marx) ने यह स्पष्ट किया है कि 'उत्पादन के साधनों' अथवा प्रौद्योगिकी के रूप में होने वाला परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन का मुख्य कारक है। कुछ प्रमुख प्रौद्योगिकी कारकों द्वारा उत्पन्न सामाजिक परिवर्तन को निम्नांकित रूप से देखा जा सकता है :

(1) यन्त्रीकरण (Mechanization)—

वर्तमान समाज में यन्त्रीकरण में विकास हो जाने के कारण हमारी मनोवृत्तियों, विश्वास, विचार तथा सामाजिक संगठन की प्रकृति बिलकुल बदल चुकी है।

यन्त्रीकरण ने प्रमुख रूप से दो

क्षेत्रों में समाज को प्रभावित किया है —

(क) विशेषीकरण के क्षेत्र में — इसके कारण पुरानी कारीगरी का महत्व कम हो रहा है, नवीन शिल्प का विकास हो रहा है तथा जटिल प्रकार के आर्थिक सम्बन्धों में वृद्धि हो रही है।

(ख) जीवन के नए आदर्शों के क्षेत्र में — इस क्षेत्र में परिवर्तन अधिक व्यापक है। हमारे जीवन में लोकरीतियों, पड़ोस की भावना, संयुक्त परिवार के प्रति प्रेम सामूहिक जीवन और परम्पराओं का महत्व निरन्तर कम हो रहा है; व्यक्तिगत-सम्पत्ति, विशाल संघों के निर्माण, गाँवों पर नगरों का आधिपत्य, पूँजीवाद और संगठित समूहों को प्रोत्साहन मिला है। इस प्रकार मशीनों ने आज सामाजिक जीवन के लगभग सभी पक्षों को बदलकर सामाजिक परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न की है।

(2) कृषि की नयी प्रविधियाँ (New Agricultural Techniques) —

कृषि के विभिन्न प्रविधियों, जैसे पशु-पालन, उन्नत किस्म के बीजों, वैज्ञानिक उपकरणों आदि में काफी विकास हो जाने के कारण कृषि-उत्पादन की मात्रा और किस्म पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। कृषि की नयी-नयी प्रविधियों में वृद्धि होने से ग्रामीण समुदाय का रूप तेजी से बदल रहा है। उदाहरण के लिए, आज उत्पादन और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है। अधिक आय ने जीवन-स्तर को ऊँचा उठाया है। कृषि प्रविधियों के विकास के फलस्वरूप गाँवों और नगरों के पारस्परिक सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ है। इस प्रकार कृषि प्रविधियों में होने वाले प्रत्यक

परिवर्तन ने ग्रामीण सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किये हैं।

(3) संचार के उन्नत साधन (Improved Technique of Communication) —

संचार के अनेक प्रविधियों (जैसे-रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन तार-व्यवस्था, मोबाइल) ने हमारे जीवन को कहीं अधिक गतिशील बना दिया है। इसने स्थानीय दूरी को इतना कम कर दिया है कि एक स्थान के विचारों को हजारों मील दूर तक कुछ क्षणों के अन्दर ही सुना जा सकता है।

(4) नवीन उत्पादन प्रणाली (New Mode of Production) —

यह उत्पादन प्रणाली एक नयी प्रविधि पर आधारित है जिसमें मशीनों के द्वारा बड़ी मात्रा में उत्पादन, संगठित व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना, श्रम-विभाजन, कार्य के विशेषीकरण और प्रचार को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। इस प्रणाली ने न केवल आर्थिक व्यवस्था का नये सिरे से निर्माण करके परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न की है, ये सभी दशाएँ सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन करके सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन देती है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सामाजिक जीवन के सभी पक्ष प्रौद्योगिकी परिवर्तन द्वारा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य ही प्रभावित हुए हैं।